

रमेश मनोहरा

जल संरक्षण बहुत जरूरी



पानी के महत्व को यदि हम ठीक से नहीं समझ पाये तो भविष्य में पानी के संकट से उभर नहीं पायेंगे जबकि प्रकृति ने हमें जो भी पानी दिया है, उसे प्रचुर मात्रा में समेटने का प्रयास करना चाहिए। जल स्रोत वर्ष भर खाली न रहे ऐसे प्रयास शासकीय या अशासकीय स्तर पर करते रहना चाहिए। जल किसी भी स्रोत से मिले क्लिफायत से खर्च करें। जहां तक हो शुद्ध जल पीना चाहिए। शुद्ध जल हमारे स्वस्थ शरीर के लिए परम आवश्यक है। पेट से जुड़ी पेशानियों के निदान हेतु अधिक से अधिक साफ जल पीना चाहिए। इससे शरीर में नमी बनी रहेगी। जल को स्वच्छ रखने के लिए गंदा जल, नदी, नालों, तालाब, पोखरों में न जाने दे। जल एक अनमोल प्राकृतिक संपदा है। इसके बिना जीवन नहीं चलता है। देश की अथवा समाज की उन्नति जल पर निर्भर है।

जैसे-जैसे गर्मी की आहट होती है वैसे-वैसे पानी का संकट गहराता जाता है। पानी की चिंता सबको सताने लगती है? कहीं-कहीं तीन चार किलोमीटर चलकर महिलाएँ/पुरुष पानी लाते हुए दिखने लगते हैं, नदी, नाले, कुँए, तालाब, बावड़ी सभी जवाब दे देते हैं। ऐसे में नगर निगम, नगर पालिकाएं भी पानी के स्रोत के लिए वैकल्पिक रास्ते ढूँढती हैं, मगर पानी के

जब सारे स्रोत सूख जाते हैं, तब पुनः बरसात के ऊपर निर्भर होना पड़ता है। ऐसे में हिन्दुस्तान ही क्या पूरा विश्व, जल एवं जल से जुड़ी विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है। मनुष्य को कहीं अनावृष्टि तो कहीं अतिवृष्टि और कहीं पेयजल की गुणवत्ता तथा जल संरक्षण आदि से जुड़ी विभिन्न समस्याओं से दो-चार होना पड़ रहा है। अतः समय के साथ जल संसाधन

प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। जहां जनसंख्या की तेजी से वृद्धि हो रही है, वहीं पानी के स्रोत सूखते जा रहे हैं। हम गर्मी की आहट आते ही पानी के लिए चिंतित हो जाते हैं। जब हमारे पास पर्याप्त पानी रहता है। तब हमें चिंता नहीं होती है। तब हम व्यर्थ ही पानी बहा देते हैं। हम घर का फर्श, गाड़ी और घर का आंगन साफ करने में खूब पानी बहा देते हैं।

यदि पहले से ही पानी की बचत करने का संकल्प लेकर चलें तब काफी पानी बचाया जा सकता है। मगर हम बचाने का प्रयास नहीं करते हैं। समय रहते सचेत नहीं रहते हैं।

यदि देखा जाए तो बढ़ती जनसंख्या के मान से पानी की खपत बहुत बढ़ी है। मगर जल स्रोतों में वृद्धि नहीं हो पा रही है। आज भी हम वर्षा पर बहुत अधिक निर्भर हैं। आंकड़ों के

अनुसार वर्तमान में भारत की जनसंख्या 135 करोड़ है जिसकी बढ़ती जनसंख्या की वृद्धि दर के अनुसार वर्ष 2050 तक 164 करोड़ तक पहुंच जाना संभावित है। जबकि 2050 में विभिन्न गतिविधियों हेतु कुल जमा जल आवश्यकता लगभग 1450 घन मीटर प्रति वर्ष होगी, जल की यह आवश्यकता वर्तमान में उपलब्ध उपयोगी जल संसाधनों 1120 घनमीटर प्रति वर्ष की तुलना से बहुत अधिक है।

यदि हम मालवा क्षेत्र की बात करें, तब मालवा के लिए कहावत प्रचलित थी-

“मालवा धरती गहन गंभीर डग-डग रोटी पग-पग नीर” अर्थात् मालवा की यह माटी इतनी सम्पन्न थी कि इस माटी को जरा सा खोद दिया जाए तब वहां से पानी निकल जाया करता था। अर्थात् 32 इंच औसत बारिश में यह जमीन पक जाया करती थी। भरपूर फसलें होती थी। गर्मी की आहट होते ही पानी की कमी मेहसूस नहीं होती थी। धीरे-धीरे न जाने किसकी नज़र इस पर लगी कि मालवा की धरती अब रेगिस्तान बनती जा रही है। पानी पृथ्वी के इतने नीचे चला गया है कि तीन से अधिक फीट तक पानी नहीं मिलता है। जबकि कभी-कभी 50-60 इंच बारिश भी होती है फिर भी गर्मी आते-आते पानी का संकट गहराने लगता है। ऐसा क्यों हुआ, इस पर हमने कभी गहराई से नहीं सोचा। देश के ऐसे कई क्षेत्र हैं जो रेगिस्तान बनते जा रहे हैं। मगर हम जल के महत्व को गर्मी की आहट ही समझते हैं। इधर प्राकृतिक साधन के रूप में जितने जल के स्रोत थे, वे सब सूखते जा रहे हैं हमने पानी की कीमत नहीं पहचानी है। पानी उपयोगिता को सचमुच जानना है तो किसी रेगिस्तान में चले जाइये, वे पानी के लिए कितने पीड़ित रहते हैं। इसका कोई विकल्प नहीं है कोई विक्रम नहीं है। हमारे शरीर के लिए 70 प्रतिशत भाग पानी का है। यानी कि हमें दिन भर में 15 गिलास पानी पीना चाहिए। हम यह भी जानते हैं कि हमारा पूरा जीवन पानी पर आधारित है फिर भी संकट आने से पहले इसे बचाने का प्रयास क्यों नहीं करते हैं।

पानी के महत्व को यदि हम ठीक से नहीं समझ पाये तो भविष्य में पानी के संकट से उभर नहीं पायेंगे जबकि प्रकृति ने हमें जो भी पानी दिया है, उसे प्रचुर मात्रा में समेटने का प्रयास करना चाहिए। जल स्रोत वर्ष भर खाली न रहे ऐसे प्रयास शासकीय या अशासकीय स्तर पर करते रहना चाहिए। जल किसी भी स्रोत से मिले किफायत से खर्च करें। जहां तक

हो शुद्ध जल पीना चाहिए। शुद्ध जल हमारे स्वस्थ शरीर के लिए परम आवश्यक है। पेट से जुड़ी पेशानियों के निदान हेतु अधिक से अधिक साफ जल पीना चाहिए। इससे शरीर में नमी बनी रहेगी। जल को स्वच्छ रखने के लिए गंदा जल, नदी, नालों, तालाब, पोखरों में न जाने दे। जल एक अनमोल प्राकृतिक संपदा है। इसके बिना जीवन नहीं चलता है। देश की अथवा समाज की उन्नति जल पर निर्भर है।

धीरे-धीरे पानी का विश्व संकट गहराता जा रहा है। भविष्य में यदि तीसरा विश्व युद्ध होगा तब वो पानी के लिए होगा। यही हालात अब बनने भी लगे हैं। इस संकट का एहसास अभी से होने लगा है-इसे मेरे इस दोहे से समझा जा सकता है।

पानी अगर न मिलेगा, बचेगी नहीं जान
इस हेतु एक दिन होगा, युद्ध रमेश महान

अतः जल संकट से बचने के लिए जल संरक्षण बहुत जरूरी है। पानी को प्रदूषित न करें, पानी जीवन के लिए अमृत है ये अमृत बना रहे, अतः इसे गंदा न करें। आप जानते हैं कि जल की विपुल राशि का 97 प्रतिशत भाग खारा समुद्री जल है। अतः उसे हम अपने दैनिक उपयोग में नहीं ला सकते हैं और 3 प्रतिशत पानी जो कि झरनों, नदियों, तालाबों व भूमिगत जल के रूप में हमें उपलब्ध है जिनका हम प्रयोग कर सकते हैं और इस थोड़े से पानी को यदि हम दूषित और बर्बाद करेंगे तो हमारे पास क्या बचेगा? यह सबसे बड़ा ज्वलन्त प्रश्न आज विश्व के सामने खड़ा है। किस तरह इस प्रश्न का समाधान किया जाए। 3 प्रतिशत पानी को किस तरह बचाकर रखा जाए। विश्व के कई क्षेत्रों में पानी का अभाव बढ़ता जा रहा है तथा पानी की गुणवत्ता संबंधी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं।



धीरे-धीरे पानी का संकट गहराता जा रहा है।

ऐसे समय हमारे पास दो विकल्प बचे हैं। किस तरह पृथ्वी के पानी एवं वर्षा के पानी का संरक्षण किया जाए। यदि आप अभी सचमुच संरक्षण न करेंगे तब हमारी भावी पीढ़ियां कोसेगी। जल की यह कथा जीवन के साथ जुड़ी है। पृथ्वी है तो जल है और जल है तो जीवन है। जीवन के लिए पानी झीलों, नदियों और छोटे-छोटे जलाशयों में संचित करना पड़ेगा।

ऐसे समय हमारे पास दो विकल्प बचे हैं। किस तरह पृथ्वी के पानी एवं वर्षा के पानी का संरक्षण किया जाए। यदि आप अभी सचमुच संरक्षण न करेंगे तब हमारी भावी पीढ़ियां कोसेगी। जल की यह कथा जीवन के साथ जुड़ी है। पृथ्वी है तो जल है और जल है तो जीवन है। जीवन के लिए पानी झीलों, नदियों और छोटे-छोटे जलाशयों में संचित करना पड़ेगा। यह पेयजल संरक्षण का एक महान काम होगा। देश की कुल बारिश का 45 प्रतिशत जल ही नदियों में पहुंचता है। पृथ्वी के भीतर का जल कुएँ खोदकर प्राप्त करते हैं। मगर आजकल इसका चलन बहुत कम हो गया। होल करके बहुत अधिक पानी निकाला जा रहा है। यही पानी हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर रहा है अतः आज आवश्यकता है, जल बचाने की। उसके संरक्षण की बहुत जरूरत है। कुछ दोहे समक्ष प्रस्तुत है-

सूखा जब से पड़ा है, हाल हुये बेहाल
त्राही-त्राही हो रही, मच रहा है बवाल
प्रयास जितना भी करें, बेकार न अब जाय
पानी बचे अब कैसे, करें ऐसा उपाय
किल्लत पानी की मची, सूखा चारों ओर
प्यासे सारे रह गये, आदमी और ढेर
पानी से ही बनी है, इस जीवन की शान
माने आप सभी इसे, कुदरत का वरदान
युगों से हरेक होंठों की, पानी है जागीर
इसमें ही आदमी की, छिपी हुई तकदीर
बुझे हरेक जन की, अब तो देखो प्यास
रहे नहीं पानी बिना, कोई यहाँ उदास

रहे घने पेड़ पौधे, हमारे मेहमान
खूब करेंगे बरसात, करें सदा सम्मान
जिधर जाओ पड़ा वहां सूखा ही श्रीमान
छीन ली है धरती की, सारी ही मुस्कान
कुँआ, ताल, पोखर, नदी, छोड़ा सबने साथ
बिन पानी हो गये हैं, रमेश सभी अनाथ
करें न बरबाद जल को, पढ़ रमेश यह पाठ
फिर रहेंगे जीवन में, हरदम तेरे ठाठ
जब था पानी खूब ही, जान सके न मोल
अब कर रहे है यारों, पानी हेतु किफोल
बिन पानी होता नहीं, कोई सा भी काम
मगर पानी का लगे है, अब तो रमेश दाम
बना हुआ है जल यहां, जीवन का आधार
इसके बिन चलता नहीं, कोई कारोबार

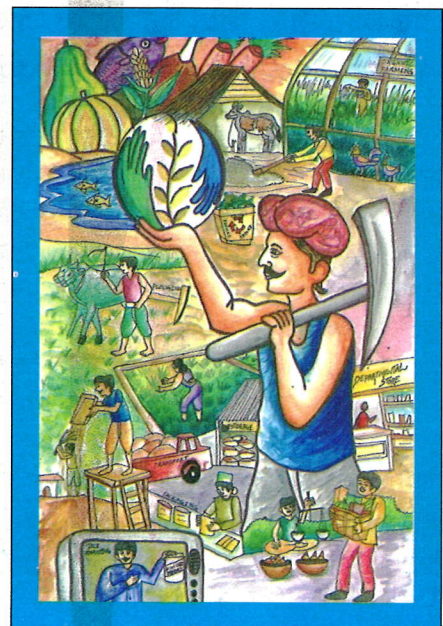
संपर्क करें:

रमेश मनोहरा

शीतला माता गली

जावरा जिला रतलाम म.प्र. 457226

मो. 9479662215



प्रदूषित पानी पीकर, लाते अनेक रोग
इसी बात को अब यहाँ, कब समझोगे लोग

जल बचाने का यारों, करें हरदम प्रयास
तरसेंगे न पानी को, रखिये ये विश्वास

जितने भी ज्यादा यहाँ पौधे आप लगायें
फिर बरसात से यारों, अच्छी राहत पायें

नदियाँ सूखी हो गईं, दिखे वहां पर रेत
ऐसे में किसान यहाँ, हांके कैसे खेत